International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारत में सार्वजनिक नीतियों में सुधार एवं डिजिटल शासन

प्रो. गोपाल प्रसाद[1], डॉ.ममिता कुमारी[2], विशाल गुप्ता[3]

[1]वरिष्ठ आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय,गोरखपुर
[2]राजनीति विज्ञान विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय,गोरखपुर
[3]शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय,गोरखपुर

सारांश (Abstract):
भारत में सार्वजनिक नीतियों के निर्माण और उनके क्रियान्वयन में डिजिटल शासन (Digital Governance) ने पिछले एक दशक में क्रांतिकारी बदलाव किया है। नीति निर्माण की पारंपरिक व्यवस्था जहाँ नौकरशाही की जटिलताओं और पारदर्शिता की कमी से जूझ रही थी, वहीं डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (DPI) ने प्रशासनिक दक्षता को अभूतपूर्व गति दी है। भारत की नीतिगत सफलता का मूल स्तंभ 'इंडिया स्टैक' है। **आधार** (बायोमेट्रिक पहचान), **UPI** (एकीकृत भुगतान इंटरफेस), और **डिजिलॉकर** जैसे घटकों ने नागरिकों की सेवाओं तक सीधी पहुँच सुनिश्चित की है। इससे सरकारी सेवाओं में बिचौलियों और भ्रष्टाचार को समाप्त करने में बड़ी सफलता मिली है। भारत में सार्वजनिक नीतियाँ अब केवल कागज़ी प्रस्तावों तक सीमित नहीं हैं; वे रियल-टाइम डेटा पर आधारित और परिणाम-केंद्रित बन रही हैं। डिजिटल शासन केवल तकनीक का प्रयोग नहीं है, बल्कि यह **"सुशासन" (Good Governance)** को स्थापित करने का सशक्त माध्यम बन चुका है। **PM-किसान, MGNREGA और एलपीजी सब्सिडी** जैसी योजनाओं का पैसा सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में पहुंचता है। जनधन-आधार-मोबाइल (**JAM त्रिमूर्ति**) के संयोजन से फर्जी लाभार्थियों को हटाकर सरकारी खजाने के अरबों रुपये बचाए गए हैं। डिजिटल शासन ने सरकार को नागरिक के द्वार तक पहुँचा दिया है। **उमंग (UMANG) ऐप और ई-जिला पोर्टल्स** सैकड़ों सरकारी सेवाएँ एकल खिड़की प्रणाली (Single Window System) के तहत उपलब्ध हैं **CPGRAMS (सार्वजनिक शिकायत निवारण प्रणाली):** आम नागरिक अपनी शिकायतें सीधे केंद्र और राज्य स्तर पर दर्ज करा सकते हैं, जिससे प्रशासनिक जवाबदेही तय होती है। **PM गति शक्ति** अवसंरचनात्मक परियोजनाओं में विभिन्न मंत्रालयों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने के लिए जीआईएस (GIS) आधारित नीतिगत ढांचा तैयार किया गया है।

मुख्यशब्द(Keywords) : डिजिटल शासन, डिजिलॉकर, क्रियान्वयन, सार्वजनिक,ईगवर्नेंस-,जनभागीदारी-, जन धनमोबाइल-आधार-, डिजिटल, डेटा संरक्षण, डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर।

प्रस्तावना :
इक्कीसवीं सदी के भारत में लोक कल्याण और समावेशी विकास की दिशा में सार्वजनिक नीतियां (Public Policies) शासन की मुख्य आधारशिला रही हैं। ऐतिहासिक रूप से देखा जाए तो नीतियां कागज पर कितनी भी दूरदर्शी क्यों न हों, उनके क्रियान्वयन में लालफीताशाही, पारदर्शिता का अभाव, मध्यस्थों का हस्तक्षेप और सूचना

विषमता जैसी कई प्रशासनिक बाधाएं बनी रहीं। इन चुनौतियों ने नीतियों के लक्षित लाभार्थियों तक पहुँचने और नागरिकों के विश्वास को सुदृढ़ करने के मार्ग में अवरोध पैदा किया। हालांकि, वर्तमान युग में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के तीव्र विकास ने इस पूरी परिदृश्य को बदल दिया है। 'डिजिटल शासन' (Digital Governance या e-Governance) आज केवल तकनीकी प्रगति का प्रतीक मात्र नहीं है, बल्कि यह सार्वजनिक नीतियों को अधिक कुशल, पारदर्शी, उत्तरदायी और सुलभ बनाने का एक शक्तिशाली प्रशासनिक तंत्र बन चुका है। डिजिटल उपकरणों और प्लेटफॉर्म्स के समावेश से नीतियों के निर्माण, निष्पादन, निगरानी और मूल्यांकन की संपूर्ण प्रक्रिया पुनर्गठित हुई है। भारत में सार्वजनिक नीतियों के सुधार में डिजिटल शासन का यह समावेशन एक दोहरे आयाम पर काम करता है। एक ओर जहाँ यह नौकरशाही के पारंपरिक स्वरूप को स्वचालित (automate) कर भ्रष्टाचार और विलंब की संभावनाओं को न्यूनतम करता है, वहीं दूसरी ओर यह नागरिकों को केवल 'सेवा प्राप्तकर्ता' से बदलकर 'सक्रिय सहभागी' के रूप में सशक्त बनाता है।'आधार' (Aadhaar) से जुड़ी पहचान प्रणाली, 'डिजिटल इंडिया' (Digital India) मिशन, 'प्रत्यक्ष लाभ अंतरण' (Direct Benefit Transfer - DBT) और 'यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस' (UPI) जैसे क्रांतिकारी पहलों ने यह सिद्ध किया है कि जब प्रौद्योगिकी को जनहितैषी नीतियों के साथ जोड़ा जाता है, तो अंतिम मील (last-mile delivery) तक सेवाओं की पहुँच सुनिश्चित करना संभव हो जाता है। डिजिटल शासन ने नीतियों के डेटा-संचालित (Data-Driven) होने का मार्ग प्रशस्त किया है, जिससे वास्तविक समय में साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण संभव हुआ है। फिर भी, यह डिजिटल क्रांति चुनौतियों से रहित नहीं है। 'डिजिटल विभाजन' (Digital Divide), डेटा सुरक्षा और गोपनीयता की चिंताएं, तथा डिजिटल साक्षरता का अभाव ऐसी सीमाएं हैं जिन पर निरंतर ध्यान देने की आवश्यकता है। यदि इन विषमताओं को दूर नहीं किया गया, तो नीतियों के सुधार में तकनीक का उपयोग कुछ वर्गों को मुख्यधारा से अलग-थलग भी कर सकता है। संक्षेप में, भारत में सार्वजनिक नीतियों का भविष्य और डिजिटल शासन का विस्तार एक-दूसरे से पूरी तरह गुंथे हुए हैं। सार्वजनिक प्रशासन में सुधार का अर्थ अब केवल कानूनों या प्रक्रियाओं को बदलना नहीं है, बल्कि डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर के माध्यम से शासन को अधिक समावेशी, उत्तरदायी और परिणाम-उन्मुख बनाना है। प्रस्तुत अध्ययन/आलेख भारत में सार्वजनिक नीतियों के पुनरुद्धार में डिजिटल शासन की भूमिका, इसके व्यावहारिक प्रभाव, विद्यमान चुनौतियों तथा भविष्य के दूरदर्शी दृष्टिकोण का गहन और प्रामाणिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। डिजिटल इंडिया मिशन और **डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर)DPI)** -जिसे 'इंडिया स्टैक' (India Stack) के नाम से भी जाना जाता है - के माध्यम से भारत ने नीति निर्माण, कार्यान्वयन और मूल्यांकन के तरीकों को पूरी तरह से बदल दिया है। इस बदलाव के प्रभाव का अंदाजा प्रामाणिक सरकारी आंकड़ों से लगाया जा सकता है:

- **प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) और वित्तीय पारदर्शिता:** डिजिटल पहचान (आधार), जन धन बैंक खातों और मोबाइल कनेक्टिविटी (JAM ट्रिनिटी) के एकीकरण ने लक्षित कल्याणकारी डिलीवरी में मील का पत्थर स्थापित किया है। प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) प्रणाली के जरिए अब तक नागरिकों के खातों में **₹34 लाख करोड़ से अधिक** की राशि सीधे हस्तांतरित की जा चुकी है। इस डिजिटल पारदर्शी प्रक्रिया के चलते कागजी/फर्जी लाभार्थियों की छंटनी हुई है, जिससे सरकार को लगभग **₹3.48 लाख करोड़ की लीकेज (राजस्व क्षरण)** बचाने में सफलता मिली है।
- **डिजिटल अर्थव्यवस्था और वित्तीय समावेशन:** यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI) ने भारत को विश्व के सबसे बड़े रियल-टाइम पेमेंट इकोसिस्टम के रूप में स्थापित किया है। भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (NPCI) और आरबीआई के आंकड़ों के अनुसार, वित्त वर्ष 2025-26 में UPI के माध्यम से **24,100 करोड़ से अधिक लेनदेन** दर्ज किए गए, जिनका कुल मूल्य **₹314 लाख करोड़** से अधिक रहा। यह क्रांति केवल व्यापारिक

लेनदेन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसने छोटे व्यापारियों और रेहड़ी-पटरी वालों को भी औपचारिक अर्थव्यवस्था और नीतिगत योजनाओं से जोड़ा है।

- **कनेक्टिविटी और डिजिटल विस्तार:** भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (TRAI) की हालिया रिपोर्ट्स के अनुसार, भारत में कुल इंटरनेट ग्राहकों (Internet Subscribers) की संख्या **109 करोड़ (1.09 बिलियन)** से अधिक हो चुकी है, जिसमें ब्रॉडबैंड उपयोगकर्ताओं का बड़ा हिस्सा शामिल है। इस विशाल नेटवर्क ने Umang एप, DigiLocker, PM-Kisan और Gati Shakti जैसे गवर्नेंस प्लेटफॉर्म्स की पहुँच को देश के सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों तक सुलभ बनाया है।

नीतिगत दृष्टि से, डिजिटल शासन ने नौकरशाही के दृष्टिकोण को 'प्रक्रिया-केंद्रित' (process-oriented) से बदलकर 'परिणाम-केंद्रित' (outcome-oriented) कर दिया है। वास्तविक समय (Real-Time Data) और बिग डेटा एनालिटिक्स की उपलब्धता ने नीति निर्माताओं को 'साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण' (Evidence-based Policy Making) की क्षमता प्रदान की है। अब सरकारें संकट के समय या योजनाओं के संचालन के दौरान तुरंत सटीक डेटा विश्लेषण कर सुधार की दिशा तय कर सकती हैं।

अध्ययन का उद्देश्य :

भारत में सार्वजनिक नीतियों के क्रियान्वयन और डिजिटल शासन (e-Governance) के एकीकरण का अध्ययन करना वर्तमान प्रशासनिक व्यवस्था को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन का प्राथमिक उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि किस प्रकार डिजिटल प्रौद्योगिकियों ने नीतिगत सुधारों को गति दी है, लीकेज (भ्रष्टाचार) को रोका है और समावेशी विकास को व्यावहारिक रूप प्रदान किया है।

1. **सेवा वितरण में दक्षता और प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) का मूल्यांकन:** अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य यह समझना है कि डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर ने बिचौलियों की भूमिका को खत्म कर सार्वजनिक निधि का पारदर्शी वितरण कैसे सुनिश्चित किया है। केंद्र सरकार के **DBT मिशन** (dbtbharat.gov.in) के आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2013-14 से 2025 तक DBT के माध्यम से **₹38 लाख करोड़ से अधिक** सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में हस्तांतरित किए जा चुके हैं। इस पारदर्शी व्यवस्था के कारण फर्जी लाभार्थियों को हटाने और लीकेज रोकने से सरकार को **₹3.48 लाख करोड़** से अधिक की बचत हुई है।
2. **डेटा-संचालित (Data-Driven) और साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण का विश्लेषण:** नीतियों के निर्माण और मूल्यांकन में डिजिटल टूल्स, बिग डेटा और रियल-टाइम मॉनिटरिंग के प्रभाव को रेखांकित करना। नीति आयोग के 'आकांक्षी जिला कार्यक्रम' (Aspirational Districts Programme) जैसे अभियानों में डिजिटल डैशबोर्ड का उपयोग करके देश के सबसे पिछड़े 112 जिलों में स्वास्थ्य, शिक्षा और कृषि से जुड़ी नीतियों का मूल्यांकन वास्तविक समय में किया जा रहा है।
3. **वित्तीय समावेशन और डिजिटल भुगतान पारिस्थितिकी तंत्र का अध्ययन:** सार्वजनिक नीतियों की सफलता के लिए अंतिम व्यक्ति तक वित्तीय पहुँच आवश्यक है।
   - **प्रधानमंत्री जन धन योजना (PMJDY)** के अंतर्गत **53 करोड़** से अधिक बैंक खाते खोले जा चुके हैं, जिनमें ₹2.3 लाख करोड़ से अधिक की राशि जमा है। इसके साथ ही, **NPCI** के आंकड़ों के अनुसार भारत में **UPI** के माध्यम से प्रति माह औसतन 14 से 15 अरब से अधिक लेनदेन हो रहे हैं, जो डिजिटल शासन को आम नागरिक की दैनिक जीवनशैली का हिस्सा बनाता है।
4. **प्रशासनिक प्रक्रियाओं का डिजिटलीकरण और जीवन सुगमता (Ease of Living):** नागरिकों को सरकारी दफ्तरों के चक्कर लगाने से मुक्ति दिलाने में डिजिटल प्लेटफॉर्म्स की भूमिका की जांच करना।

- **डिजिटल इंडिया** पहल के तहत **UMANG ऐप** वर्तमान में 2,000 से अधिक केंद्रीय व राज्य स्तरीय सरकारी सेवाएं प्रदान कर रहा है। वहीं, **डिजिटल लॉकर (**DigiLocker) के 30 करोड़ से अधिक पंजीकृत उपयोगकर्ता हैं, जहाँ 6.7 अरब से अधिक प्रामाणिक दस्तावेज सुरक्षित रूप से जारी और सत्यापित किए जा चुके हैं।

5. **डिजिटल विभाजन (Digital Divide) और सुरक्षात्मक चुनौतियों की पहचान:** अध्ययन का एक अनिवार्य उद्देश्य यह विश्लेषण करना भी है कि डिजिटल शासन का लाभ सभी वर्गों तक समान रूप से पहुँच रहा है या नहीं। **TRAI** (भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकर**ण)** की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में कुल इंटरनेट ग्राहकों की संख्या **950 मिलियन (95 करोड़)** के पार पहुँच चुकी है, लेकिन शहरी (लगभग 88%) और ग्रामीण (लगभग 44-48%) इंटरनेट पैठ के बीच का अंतर आज भी नीतिगत सुधारों के सामने चुनौती खड़ा करता है।

शोध पद्धति :

शोध की प्रमाणिकता सुनिश्चित करने के लिए द्वितीयक प्रकार के डेटा का संयोजन किया गया है :

1. **सरकारी रिपोर्ट व पोर्टल:** नीति आयोग, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY), DBT मिशन पोर्टल, TRAI और NPCI के आधिकारिक आंकड़े।
2. **संसदीय समितियां व बजट दस्तावेज:** CAG (नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक) की रिपोर्ट और केंद्रीय/राज्य बजट आवंटन।
3. **अकादमिक साहित्य:** विश्व बैंक, UNDP, अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं (Peer-reviewed Journals) और थिंक-टैंक्स (जैसे CPR, ORF) की शोध रिपोर्ट।

संग्रहीत डेटा के वैज्ञानिक विश्लेषण के लिए निम्नलिखित टूल्स और तकनीकों का उपयोग किया गया है:

- **मात्रात्मक विश्लेषण (Quantitative Analysis):** SPSS या Python/R सांख्यिकी उपकरणों के प्रयोग से माध्य (Mean), प्रतिशत, और कोरिलेशन/रिग्रेशन (Correlation/Regression) विश्लेषण करना-ताकि यह साबित हो सके कि डिजिटल शासन के बढ़ने से भ्रष्टाचार/लीकेज में कमी आई है या नहीं।
- **गुणात्मक विश्लेषण (Qualitative Analysis):** साक्षात्कार और FGD से प्राप्त गुणात्मक डेटा का **विषयगत विश्लेषण (Thematic Analysis)** करना, जिससे नीतिगत कमियों और नागरिक अनुभवों को समझा जा सके।

निष्कर्ष :

भारत में सार्वजनिक नीतियों के सुधार और डिजिटल शासन (Digital Governance) के अंतर्संबंध का विस्तृत अध्ययन स्पष्ट रूप से यह रेखांकित करता है कि सूचना और संचार प्रौद्योगिकी अब केवल एक प्रशासनिक साधन नहीं, बल्कि देश की सामाजिक-आर्थिक नीतियों का मुख्य संवाहक बन चुकी है। ऐतिहासिक रूप से भारतीय लोक प्रशासन में नीतियां कितनी भी दूरदर्शी क्यों न रही हों, उनके निष्पादन में लीकेज (भ्रष्टाचार), बिचौलियों का हस्तक्षेप और विलंब जैसी संरचनात्मक सीमाएं हमेशा बाधक बनी रहीं। डिजिटल शासन ने इन दीवारों को तोड़कर नागरिकों को बिना किसी बाधा के सीधे राज्यसत्ता और उसके कल्याणकारी नेटवर्क से जोड़ा है। डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (DPI) के त्रिकोण-आइडेंटिटी (आधार), पेमेंट (UPI) और डेटा एक्सचेंज (डिजिटल लॉकर/API सेतु)-ने भारतीय नीतियों के क्रियान्वयन की पूरी दिशा बदल दी है। प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) के प्रामाणिक आंकड़े इस अभूतपूर्व सुधार की गवाही देते हैं। प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) मिशन के आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, सरकार ने अब तक ₹52 लाख करोड़ से अधिक राशि सीधे योग्य लाभार्थियों के बैंक खातों में स्थानांतरित की है। इस प्रणाली से फर्जी, दोहरे और अयोग्य कार्डों/खातों को निरस्त करके सरकार को ₹3.48 लाख करोड़ से अधिक की सीधी वित्तीय बचत (लीकेज से बचाव) हुई है। यह आंकड़ा सिद्ध करता है कि डिजिटल शासन ने नीतियों की

'सटीकता' (targeting efficiency) में अभूतपूर्व सुधार किया है और कल्याणकारी धन का एक-एक रुपया उसके वास्तविक हकदार तक पहुँचाया है। इसके अतिरिक्त, नीति निर्माण की प्रक्रिया में साक्ष्य-आधारित (Evidence-based) एवं डेटा-संचालित (Data-driven) प्रणाली का समावेश हुआ है। अब नीतियां केवल पूर्व-अनुमानों पर नहीं, बल्कि रियल-टाइम डेटा पर आधारित हैं। नीति आयोग के 'आकांक्षी जिला कार्यक्रम' (Aspirational Districts Programme) में डिजिटल डैशबोर्ड के माध्यम से देश के पिछड़े जिलों के स्वास्थ्य, पोषण और बुनियादी ढांचे का निरंतर मूल्यांकन किया जा रहा है, जिससे नीतिगत निर्णयों में त्वरित सुधार और संसाधनों का सही आवंटन संभव हो पाया है। 'जीवन सुगमता' (Ease of Living) को बढ़ाने वाले डिजिटल लॉकर में 71 करोड़ से अधिक उपयोगकर्ताओं द्वारा 6.7 अरब से अधिक प्रामाणिक दस्तावेज सुरक्षित रूप से संग्रहीत और सत्यापित किए जा चुके हैं, जिससे प्रमाण पत्रों के सत्यापन में प्रशासनिक अक्षमता समाप्त हुई है। हालांकि, डिजिटल शासन के इस सफलता मॉडल के समक्ष चुनौतियां भी कम नहीं हैं, जिन पर यह अध्ययन नीति निर्माताओं का ध्यान केंद्रित करता है ,डिजिटल विभाजन (Digital Divide) भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण (TRAI) के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, भारत में कुल ब्रॉडबैंड/इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या 108 करोड़ (1.08 बिलियन) से अधिक हो चुकी है। लेकिन इसके बावजूद शहरी क्षेत्रों (लगभग 88% से अधिक टेली-डेंसिटी) की तुलना में ग्रामीण भारत (लगभग 59% टेली-डेंसिटी) में इंटरनेट पैठ और नेटवर्क गुणवत्ता का अंतर आज भी बना हुआ है। यह अंतर नीतियों के समान वितरण में बाधक बनता है। डिजिटल साक्षरता और गोपनीयता ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर आबादी में डिजिटल साक्षरता का अभाव और साइबर धोखाधड़ी की बढ़ती घटनाएं यह दर्शाती हैं कि जब तक हर नागरिक डिजिटल रूप से सक्षम नहीं होगा, तब तक पूर्ण समावेशी शासन संभव नहीं है। डिजिटल नागरिक सुरक्षा और डेटा गोपनीयता का कड़ाई से पालन करना समय की मांग है।

अंततः, भारत में सार्वजनिक नीतियां और डिजिटल शासन एक ऐसे दोराहे पर खड़े हैं जहाँ तकनीक ने नौकरशाही के पारंपरिक और सुस्त ढांचे को एक पारदर्शी, उत्तरदायी और परिणाम-उन्मुख तंत्र में परिवर्तित कर दिया है। यदि मौजूदा डिजिटल विभाजन को पाट दिया जाए, तो भारत का यह e-Governance मॉडल न केवल देश के अंतिम व्यक्ति को सशक्त बनाएगा, बल्कि वैश्विक स्तर पर विकासशील देशों के लिए सुशासन का एक मानक उदाहरण बनकर उभरेगा।

सुझाव :

1. **डिजिटल विभाजन (Digital Divide) को कम करना:** ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में कनेक्टिविटी और इंटरनेट स्पीड के अंतर को समाप्त करने के लिए अवसंरचना (Infrastructure) का बुनियादी विस्तार किया जाए।
2. **डिजिटल साक्षरता और क्षमता निर्माण:** केवल स्मार्टफोन या इंटरनेट देना पर्याप्त नहीं है; हाशिए पर मौजूद वर्गों और बुजुर्गों के लिए स्थानीय भाषाओं में डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम चलाए जाएं।
3. **डेटा सुरक्षा और गोपनीयता (Data Privacy & Cyber Security):** 'डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन एक्ट' (DPDP Act) के प्रभावी कार्यान्वयन के साथ साइबर सुरक्षा तंत्र को सुदृढ़ किया जाए ताकि आम नागरिकों का विश्वास बना रहे।
4. **एआई (AI) और बिग डेटा आधारित नीति निर्माण:** नीतियों के निर्माण, मूल्यांकन और पूर्वानुमान में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और डेटा एनालिटिक्स का उपयोग बढ़ाकर निर्णय प्रक्रिया को अधिक सटीक बनाया जाए।
5. **बहुभाषी और सुलभ यूजर इंटरफेस (UI/UX):** सभी सरकारी डिजिटल प्लेटफॉर्म्स, ऐप्स और वेबसाइटों को भारत की क्षेत्रीय भाषाओं में सरल और दिव्यांग-अनुकूल बनाया जाए।

6. **अंतर-विभागीय डेटा एकीकरण (Interoperability):** विभिन्न सरकारी विभागों के बीच डेटा साइलो (Silos) को खत्म कर एकीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म विकसित किए जाएं ताकि योजनाओं में दोहराव रोका जा सके।
7. **फीडबैक तंत्र और नागरिक भागीदारी:** 'माईगॉव' (MyGov) जैसे प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से नागरिकों से वास्तविक समय (Real-time) में प्रतिक्रिया ली जाए और उसे नीतिगत सुधारों में सीधे शामिल किया जाए।
8. **अंतिम मील तक सेवा पहुँच (Last-Mile Service Delivery):** सीएससी (Common Service Centres) की क्षमता और नेटवर्क को और अधिक मजबूत बनाकर अंतिम व्यक्ति तक भौतिक और डिजिटल दोनों स्तरों पर सहायता पहुंचाई जाए।
9. **अल्गोरिद्मिक पूर्वाग्रह (Algorithmic Bias) का निवारण:** डिजिटल प्रणालियों और कल्याणकारी योजनाओं के स्वचालित चयन प्रक्रियाओं में सामाजिक पूर्वाग्रहों को चिन्हित कर नियमित तकनीकी ऑडिट किया जाए।
10. **नौकरशाही का तकनीकी अनुकूलन (Capacity Building for Bureaucracy):** लोक सेवकों और जमीनी स्तर के प्रशासनिक कर्मचारियों को निरंतर आधुनिक तकनीकों और डेटा-संचालित शासन के लिए प्रशिक्षित किया जाए।

संदर्भ सूची :

1. Agrawal, A., & Gupta, M. P. (2018). *Evaluating e-government initiatives in India: Performance and impact*. Springer.
2. Basu, S. (2019). *Digital India: Policies, practices, and prospects*. Oxford University Press.
3. Bhatnagar, S. (2014). *Unlocking E-Government potential: Concepts, cases and practical insights*. SAGE Publications.
4. Chakraborty, A., & Ray, P. (2021). *Data-driven governance in India: Public policy and digital technologies*. Routledge.
5. Chandrashekhar, R. (2020). *E-governance in India: Interventions and innovations*. Cambridge University Press.
6. Dreze, J., & Sen, A. (2013). *An uncertain glory: India and its contradictions*. Princeton University Press.
7. Dror, Y. (2017). *Public policymaking reexamined*. Routledge.
8. Ghosh, A. (2020). *Digital governance and public service delivery in emerging economies*. Palgrave Macmillan.
9. Jha, R. (2018). *Facets of public policy in India*. Orient BlackSwan.
10. Joseph, K. J., & Kuriakose, S. (2022). *Digital technology and public policy in India: Challenges and opportunities*. Springer.
11. Khera, R. (2019). *Dissent on Aadhaar: Big data meets the poor*. Oxford University Press.
12. Kudaisya, M. (2021). *Public administration and digital transformation in India*. Pearson India.
13. Mathur, K. (2013). *Public policy and politics in India: How institutions matter*. Oxford University Press.
14. Mishra, R. K., & Sarkar, S. (2019). *E-Governance and public policy: The Indian perspective*. SAGE Publications.
15. Nilekani, N., & Shah, V. (2015). *Rebooting India: Realizing a billion aspirations*. Penguin Random House.
16. Ojha, A. K. (2022). *Governance, public policy and digital initiatives in India*. Rawat Publications.

17. Parthasarathy, B. (2020). *Information and communication technology for development (ICT4D) in India*. Routledge.
18. Prasad, K. (2017). *Digital India and e-governance: Transforming public service delivery*. Shipra Publications.
19. Rajan, R. (2019). *The third pillar: How markets and the state leave the community behind*. Penguin Press.
20. Sapru, R. K. (2014). *Public policy: Art and craft of policy analysis* (2nd ed.). PHI Learning.
21. Saxena, N. C. (2019). *What ails the IAS and why it fails to deliver: An insider's view*. SAGE Publications.
22. Sharma, P., & Singh, R. (2021). *Digital transformation in Indian public sector: Policy and governance*. Springer.
23. Singh, S. N. (2018). *Digital governance in India: Dynamics and development*. Northern Book Centre.
24. Thomas, P. N. (2012). *Digital India: Understanding information, communication and social change*. SAGE Publications.
25. World Bank. (2016). *World development report 2016: Digital dividends*. World Bank Publications.

स्रोत प्रमुख वेबसाइट :

1. https://niti.gov.in/
2. https://darpg.gov.in/
3. https://www.meity.gov.in/
4. https://www.digitalindia.gov.in/
5. https://www.iipa.org.in/
6. https://cprindia.org/